लिंग

परिभासा :- नागपुरी लोक भासा हेके सेले इकर में लिंग निर्नय कर बगरा समस्या नखे। लिंग कर माने होवेला जेकर से पुरुष(पुरुख) चाहे स्त्री (जनी) जाइत कर पहचान होवे।

चाहे

संज्ञा कर जोन रूप से अदमी चाहे जिनिस कर नर चाहे मादा जाइत कर बोध होवे उके बेयाकरन में लिंग कहल जायला।

नागपुरी में कर्त्ता इया कर्म कर अनुसार लिंग नि बदले, कहेक माने क्रिया कर लिंग हर घड़ी एके रहेला।

लिंग कर पता संज्ञा से चलेला। संज्ञा कर मोताबिक लिंग नि चलेला। संज्ञा चाहे सर्वनाम आपन ठाँव में थीर रहेला। इसन उदाहरन संस्कृत, बंगला जइसन विकसित भासाव में मिलेला।

नागपुरी में मुध रूप से दूइ गो लिंग होवेला-

(क) पुलिंग

(ख) स्त्रीलिंग

(केउ-केउ विद्वान मन उभयलिंग आउर बेलिंगो कर चरचा कइर हँय।)

लिंग परिवर्तन - (क) नागपुरी में लिंग बदलेक ले पुलिंग कर आखिर में -इ, इन, आइन, जोइड़ के स्त्रीलिंग बनाल जायला इकर अलावे बहुत सबद मनक निजे स्त्रीलिंग हय। जइसे -

मरद	**जनि**
गुरु	**गाय**
बाप	**माँय**
बकरा	**छगरी**

(ख) पुलिंग कर आखरी में 'इ' जोइड़ के स्त्रीलिंग बनाल जायला जइसे -

छोड़ा	**छोड़ी**
बाछा	**बाछी**
घोड़ा	**घोड़ी**
गधा	**गधी**
छोटका	**छोटकी**
झगराहा -	**झगराही**
बिसाहा	**बिसाही**

लेढ़ा लेढ़ी

खैटा खैंटी

(ग) "इन" जोड़ड़ के पुलिंग से स्त्रीलिंग बनाल जायला। जइसे-

बामहन बामहनिन

बाघ बाघिन

सांढ सांढ़िन

मालिक मालकिन

धांगर धंगरिन

जोगी जोगिन

समधी समधिन

(घ) 'आइन' जोड़ड़ के पुलिंग से स्त्रीलिंग बनाल जायला। जइसे-

ठाकुर ठकुराइन

पाँडे पँड़ियाइन

भगत भगताइन

ओझा ओझाइन

मिसिर-   मिसराइन

नागपुरी में बेजान, छोट चीज़ चाहे 'प्राणी' उभय लिंग मानल जायँना।

जइसे- ढिला, चिमटी, लीख, चील्हर, पखना, पानी, लोहा, गुड़-गुड़,डोरा, बाल्टी, मने।

-

<u>**वचन**</u>

परिभासा: संज्ञा, सर्वनाम, बिसेसन चाहे क्रिया कर जोन रूप से संख्या (गिनती) कर बोध होवे उके बचन कहल जायला।

चाहे

सबद कर संख्या बोधक रुप कर नाँव के बचन कहल जायला। बचन से सीधा अरथ संख्या गिनती कर हय। बचन से पता चलेला कि कोनवे चीज कतना संख्या में हँय।

नागपुरी में बचन दुइ गो होवेला -

1.एक बचन

2.बहु बचन

1. एक बचन - जोन सबद से एकला एक चीज, जीव चाहे काम कर बोध होवे उके एक बचन कहल जायला।

जइसे - छउवा, ढोढ़हा, लंभा। (खरगोश) घर,

2. बहु बचन - जोन सबद से एक से बगरा चीज, जीव चाहे काम कर बोध होवे उके बहुवचन कहल जायला।

जइसे - छउवामन, घरमन, किताबमन, पिलवामन।

एकबचन से बहुवचन बनायक नियम

1. नागपुरी में एक बचन से बहुबचन बनायक बहुत सरल हय। कोनवे जीव, चीज चाहे कामकर संगे मन प्रत्यय लगाय देले बहुबचन बइन जायला।

जइसे -

अदमी -	अदमीमन
गरु	गरुमन
पूखना	पूखनामन
गछ	गछमन
खाता	खातामन

2. नागपुरी में 'मने' लागाइयो के बहुबचन बनाल जायला। इकर चलते अरथ मे कोनो बदलाव नि होवेला। जइसे-

अदमी अदमी मने

गरु गरु मने

पखना पखना मने

गछ गछ मने

खाता खाता मने

3. नागपुरी मे 'झन' इया 'झने' लगाय के बहुबचन बनाल जायला। झन कर प्रयोग खास कइर के अदमी ले कहेक माने एक ले बगरा अदमी ले करल जायला।

जइसे -

दुइझन / झने

कयझन / झने

ढेइर झन / झने

माने हियाँ अदमी जाइत कर बोध कर प्रधानता रहेला।

4. नागपुरी में संज्ञा सबद कर संगे सउब लगाय के एक बचन से बहुवचन बनाल जाय सकेला।

एक वचन	बहुवचन
अदमी	सउब अदमी
जनाना	सउब जनाना
कचिया	सउब कचिया
खटिया	सउब खटिया
पटिया	सउब पटिया
लेदरा	सउब लेदरा

मन / मने / झन / झने कर परयोग (प्रयोग) संज्ञा कर बादे होवेला जबकि 'सउब' संज्ञा कर पहिले आउर पाछे (बादे) दुइयो जगन कइर के बनाल जाय सकेला|

जइसे -

सउब अदमी

अदमी सउब

सउब गरु

गरु सउब

सउब घर

घर सउबा

5. जब संज्ञा के पहिले संख्यावाचक बिसेसन कर परयोग (प्रयोग) करल जायला।

मन / मने, झन/ झने कर बेगर परयोग (प्रयोग) करले बहुवचन बनाल जायला।

जइसे -चाइरो भाइ घर आलँय। सातो बहिन नइहर गेलँय।

हियाँ चाइर आउर सात बहुबचन कर बोध करुवायला।

6. सहर तरिया ठाँव में चाहे चट्टी ठाँव मन में कहों-कहों 'मन' कर ठाँद में इन लागाइयो के बहुबचन बनायक चलन भेटायला। जइसे -

एकबचन	बहुबचन
हम	हमरिन

तोंय तोहरिन/तोहिन/तुहिन

इसन परयोग (प्रयोग) कहनी, नाटक, उपन्यास नाटक जइसन साहित में पात्र,स्तर मोताबिक संवाद में बगरा भटायला।